शत-शत बार प्रणाम

संकलित

हे अमरों की जननी
तुमको शत-शत बार प्रणाम,
मातृभूमि जननी हम सब की
तुमको शत-शत बार प्रणाम ।

हिमगिरि मुकुट बना मस्तक का
चरण-चूमता अथाह सागर,
गंगा-यमुना हार बनी हैं
धाराओं में कितना मृदु स्वर !

फल-फूलों से लदी डालियाँ
हरे-भरे हैं खेत झूमते,
रंग-बिरंगे पक्षी गाते
वन्य-जंतु निर्भय घूमते ।

ज्ञान और विज्ञान की धरती
साँस-साँस में वेद ऋचाएँ
सत्य-अहिंसा की है शक्ति
दया-प्रेम पर हम इतराएँ ।

ऐसी माँ की रक्षा के हित
सौ-सौ बार तजें हम प्राण,
जब तक है यह अपना जीवन
नित गाएँ तेरा गुण गान ।

मातृभूमि जननी हम सबकी
तुमको शत-शत बार प्रणाम ।

शब्द-अर्थ

अमर - देवता, जो न मरे
अथाह - गहरा
वन्य - जंगली
नित - सदा, नित्य
प्रणाम - नमस्कार, नमस्ते, अभिवादन
सागर - समुद्र, वारिधि, जलनिधि
शत - सौ
मृदु- मीठा, मधुर
वेद ऋचाएँ- वेदों के मंत्र
वेद भारतीय संस्कृति के आदि ग्रंथ हैं । वेद चार हैं – ऋग्वेद, यजुर्वेद , साम वेद और अथर्व वेद
तजें - छोड़ें, त्याग करें
जननी - माँ, माता
हिमगिरि - हिमालय, हिमराज, हिम शैल

अभ्यास

भाव बोध :

१. अमरों की जननी कौन है ? उसे ऐसा क्यों कहा गया है ?

२. हिमालय को भारत का मुकुट क्यों कहा गया है ?

३. इस कविता में देश की किन-किन विशेषताओं पर प्रकाश डाला गया है ?

४. 'ज्ञान और विज्ञान की धरती' कौन है ? ऐसा कहने का तात्पर्य क्या है ?

५. अपनी मातृभूमि के लिए हम क्या कर सकते हैं ?

६. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट करो :

(क) सत्य अहिंसा की है शक्ति

(ख) ज्ञान विज्ञान की धरती

(ग) गंगा यमुना हार बनी हैं,
धाराओं में कितना मृदु स्वर !

अनुभव विस्तार :

३. (क) देशप्रेम विषयक कुछ कविताएँ याद करो ।

(ख) ऐसी कविताओं का अभ्यास करो और कक्षा में गाओ ।

(ग) शिक्षकों से पूछकर वेदों के बारे में जानकारी प्राप्त करो ।

(घ) भारत वर्ष की प्राकृतिक और भौगोलिक समृद्धि की सूचना प्राप्त करो ।